Received: May ‘22
Revised:
Accepted: June ‘22

© 2022 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

कृष्णा सोबती की कलम और नारी संवेदना

अल्पना मिश्रा
अतिथि विद्वान, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्यप्रदेश

हिन्दी साहित्य का इतिहास साक्षी है कि उत्तरशती महिला लेखन का स्वर्णकाल रहा है। नारी जागरण नारी अस्तित्व एवं अस्मिता की सजगता की दृष्टि से यह काल नारी की सशक्तिकरण वाली छवि को पूर्णरूप से प्रदर्शित करने में सक्षम हुआ है। जिसको नारी लेखिकाओं की कलम ने स्थापित करने में पूरा सहयोग किया है।

नारी अस्तित्व एवं अस्मिता एवं अस्मिता की सजगता नारी सक्षमीकरण का यह दौर रहा है। नारी के सम्बन्ध में सदियों से स्थापित जो मान्यताएँ थी वर्धनाए थी कमजोर थे लक्षण रेखा थी उनमें तीव्र गति से बदलाव आया। नारी ने दैहिक दुर्बलता की मानसिक इच्छा शक्ति से परिपूर्ति कर दी। सम्प्रति वह सीता सावित्री के निथक को अस्वीकार कर हर क्षेत्र में तेजस्विनी होने का प्रयास कर रही है। इसमें उसके लिए सबसे बड़ी बाधा एवं विरोध, पुरूष मानसिकता है। जो अपने को सर्वस्व मान नारी के वर्चस्व को कुचलने के लिए कटिबद्ध है।

परंतु वह नारी जानती है कि भारतीय नारी वर्चस्वता की नही समानता की आकांक्षी है। इतनी ऊर्जा है कि वह घर के सभी उत्तरदायितवों का निर्वाह करती हुई अपने नौकरी व्यवसाय के कर्तव्यों को मिलती है। इस जी तोड़ अथक परिश्रम के बावजूद यदि पति उसकी उपेक्षा करता है उसका आर्थिक एवं दैहिक शोषण करता है तब वह अपनी संपूर्ण शक्ति से उसका विरोध करती है। उसमें वह कभी टूटती है तो कभी उभरती है दाम्पत्य जीवन में व्याप्त हो रही कटुता एवं सम्पत्य विच्छेद की अधिकता इसी का परिणाम है। नारी जीवन की वर्तमान स्थिति एवं गति को दृष्टि केन्द्र में रखकर सुश्री कामिनी तिवारी द्वारा इस ग्रंथ का प्रणयन गौरवास्पद है। अपने जीवन पर कोई किताब लिखना कृष्णा जी ने कुछ विशेष महत्वपूर्ण नही समझाा। स्वयं से ज्यादा समाज में घटित घटनाओं को पाठन के सामने रखना अधिक जरूरी समक्षती है। कम शब्दों में अधिक बयान करने वाली लेखिका कृष्णा सोबती अपने साहित्य लेखन से ही अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराती हैं ग्रामीण क्षेत्र मे जन्मी कृष्णाजी के कृतित्व है ही ग्रामीण समाज जीवन अचार–विचार खान–पान रीति–रिवाज रूचि–परंपराएँ पर्व–त्यौहार सुख–दुख भोग विलास शेषण आदि का यर्थाथ वर्जग मिलता है।

कृष्णाजी का अनुभव ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सृजन है। कोई भी साहित्याकार सीमित नही होताय बल्हि विस्तीणता एवं विभिन्न आयाम ही उसकी पहचान होती है कोई एक कृति पढ़ने से साहित्यकार की सीमा नही दिखती।

साहित्यकार को समझने पर खने के लिए उसके व्यक्तित्व कृतित्व का तान जरूरी है। साहित्यकार का साहित्य समाज का आईना है। अतः साहित्य ही समाज को उसके परवेश की पहचान कराता है इसलिए साहित्यकार की रचना जितनी महत्वपूर्ण है। उतनी ही इसकी सोच एवं अनुभव के आयाम भी महत्वपूर्ण सावित होते है। सुरेखा ताँवे का मानना है कि कृष्णा सोवती जी के अनुभव ने उनके कथन और कथा में बहुत ही विलक्षण तेवर और समृद्धि था सारांस सृजित किया।

कथा लेखिका कृष्णा सोवती का जन्म निश्चित ही हिन्दी साहित्य के लिए एक अनुपम देने है उनके अवतरण के ष्यि में निश्चित कुछ कह पाना शायद सीाव नही पर यह वो कहा जा सकता है कि इस प्रकार की प्रतिमा की छनी कलमकार का आना विश्व के लिए ही एक भेंट की तरह है। ‘‘कृष्णा सोवती का जन्म 18 फरवरी 1925 में पंजाब प्रान्त के गुजरात जिले में हुआ या गुजरात जिला अब पाकिस्तान में है। स्वतंत्रता प्राप्ति के ऐतिहासिक कालखंड में कृष्णा सोवती बीस–बाइस साल की थी’’ कृष्णा सोवती के जीवन का प्रारंभिक काल देष और समाज की दृष्टि से उथल–पुथल का काल था आजादी का प्रारंभिक काल देश और समाज की दृष्टि से उथल–पुथल का काल था। कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली हैं, कृतित्व भी उससे कम नही है। लेखिका पिछले तीस सालों से साहित्य की सेवा कर रहे है। वे एक मूर्धन्य प्रतिमा सम्पन्न साहित्यकार है। बीसवी सदी के उत्तरार्ध में नई भावभूमि को लेकर उभरे उपन्यासकारों में संजीव अपनी अलग और महत्वपूर्ण पहचान बना चुके है। कृष्णा सोवती का कृतित्व लीक हटकर है। उनका साहित्य सृजन पूर्ण मनोवेग और परिधान का परिणाम वह एक परिश्रमी कथाकार है।

कृष्णा सोबती एक वक्त, एक खतरा, एक तुर्शी एक संवेदना एक जिंदगी। ‘‘हिन्दी की अत्यंत विवादस्पंद लेकिन अद्वितीय कथा लेखिका कृष्णा सोवती के लिए लिखना महज लिखना नही है एक जिंदगी और उतारना है। तमाम हरकतों को घोर –घोर से रचना में उतारना है। जैसे एक मौसम से गुजरना–कुछ इस तरह का एक जीवंत सिलसिला कृष्णा जी के लेखन में जो उनकी हर कृति की एक नई दिलचस्पी के प्रतिक्षा कराता है।’’ इक्कीसबी शताब्दी में नारी–विमर्श का स्थान अत्यन्त

महत्वपूर्ण है। नारी के पास अपने अनुभव हैं जो वह प्रकट करना चाहती हैं इन्ही अनुभवों के कारण ही नारी–विमर्श की संकल्पना सामने आई है।

सोबती स्त्री स्वंतत्रता की प्रेरक है। स्त्री प्राचीन काल से पिंजरे में बंद थी, नारी की जिंदगी एक दलित के समान थी, इस हालत को उन्होनें करीब से जाना और अपने आप में अनुभव किया, तब सोबती अपनी लेखनी द्वारा इस बंधन को मुक्त कराने का प्रयास किया है। सोबती ने अपने रचना के पात्रों के माध्यम से स्त्रिी स्वतंत्रता की मॉग करते है और उसे पाने का प्रयास करतीं है। कृष्णा सोबती के बारे में रोहणी के शब्दों में !! पिंजर बध्द तोते में भाग्यवती का रोल माडल तब भी जिंदा रहा जरूरत थी उसे तलासने की , मारने की इसमें कृष्णा ने भी घर खोई लेकिन फिर पा ही लिया कि जिस तोते की टॉग तोडी उसी तरह रोलमाडल की भी टॉग टूट गई हॉथ दबोचा तो हॉथ गर्दन मरोडी तो चित्क कर जमीन पर गिर गया। और स्त्री जी उठीं।'' सदियों से बनी उसकी देह में घरकर हुई सीने में दबा स्फटिक दरिया, स्वच्छपारदर्श जल से उफन पडा और काठ के टांगों में सिरहन हुई अपने पैरों ड़ग दो ड़ग भरने की चाह अपने ऑखों में दुनिया देखने का उत्साह उसे पहचानने का विश्वास यही तो है मित्रों, स्त्री महकबन्नों ,आसू और आधूनिक नारियां सोबती केबल अपने को स्त्री ज्येष्ठ लेखिका न मानकर दूसरी स्त्री लेखिकाओं को प्रेरणा दी। और उनकी प्रसंशा भी करती हैं ''जनवरी 2000 हजार में हंश पात्रिका जिन्दगी नामा के चर्चा पर स्वयं सोबती कहती हैं सम्मानित निर्णायक मंडल यदि आप जिंदगी नामा के शिवाय बहुत सारी ऐसी रचना है । मंन्नू भंडारी, अल्का गीतांजली ,राजी सेठ, मैयेयी पुष्पा आदि के उपन्यासों का इस सूची में स्थान देते तो पत्र लिखने की काई नौबत नही आती।''

हिन्दी साहित्य सजग में बोल्ड लेखिका के रूप में प्रचलित कृष्णा जी ने यू तो बहुत कम लिखा है! पर जो लिखा है वही उनको अमिट पहचान है। अपने लेखन के साथ–साथ अपने आप को विकसित करते कृष्णा जी का लेखन पहले तो समय के साथ–साथ अद्यतन रूप में चलता है फिर भी आधुनिकता की ओर और फिर बहुत आगे निकल भविष्य की पहचान बनता है।

कृष्णा सोबती का प्रथम प्रकाशित छोटा–सा उपन्यास डार से बिछुड़ी है। पंजाब की ग्रामीण पृष्ठीाूमि पर लिखागया यह उपन्यास 1958 में प्रकाशित हुआ। यह डार से बिछुड़ी का तात्पर्य है अपने परिवार से अलग हुई एक युकवक निरंतर अपने जीवन में परिवार से विछडनें की पीडा सहन करती है इस उपन्यास की नायिका है। उपन्यास का कथानक पंजाब के गुजरात इलाके से हैं जब अंग्रेजो व शिखों के बीच भारी जंग छिड़ी थी। उपन्यास के नायिका पाशों अपने दो मामा–मामी व नानी के साथ रहती है उसकी मा बचपन में ही अपने इस बेटी को छोडकर शेख जाति के व्यक्ति के साथ भाग गई थी। हिन्दु–मुस्लिम अन्तर्जातीय विवाह आज भी उतनी ही चरम सीमा पर विवादास्पद है। और उपर से एक बच्चे की मॉ का अपने बच्चे को छोडकर भागना आगामी सैकडों वर्षों तक भारतीय नारी के लिए अक्षम्य ही रहेगा। इतनी कलंक पाशों के मामा–मामी समाज द्वारा नित झेतले ही रहते है।जिसका जिक्र उपन्यास में किया गया है–मॉं को यह किसी बात की कोई कमी नहीं परन्तु अपने किये का पश्चाताप अवश्य होता है कि अपने राजा जैसे भाइयों को शर्मिंदाकर यहा आई हैं। वह काम उसकी बेटी द्वारा करने पर वह उसे कहती है वही डूब मरती अरी तू अपने परायों की बैरिन बन क्यू घर से निकल पड़ी?''

कृष्णा सोबती ने आज के समय और समाज की नब्ज को देखते हुए इस बात अनुभव किया है कि अब स्त्री पुरूष संबंधों की कोई आधार शिला रखनी होगी। और कुछ नये मूल्य कि निर्धारित करने होगे। आधूनिक सामाजिक व्यवस्था को अब और अधिक दिन पुराने मूल्यो पर नही चलाया जा सकता। शादी के मान दंण्डो को भी बदलना होगा। पहले की भाति चीजे और संबंध हम पर आरोपित किये जा रहे है। जब नारी अपने जीने की अर्थवता किसी पुरूष में ढूढ़ने लगती है। तो वह उसे छण अपने आप को किसी यातना में फेंक देती हैं।

लेखन लेखन होता है नर–मादा नहीं। उसे नर–मादा के खॉचों में बॉटकर देखने वाली दृष्टि पुर्वाग्रहस्त है, लेखन जिसतरह पुरूष लेखन की अनुभूमि और चेतनी की अभिव्यक्त हैं स्त्री लेखन द्वारा लिखा गया लेखन उसके विशिष्ट स्वनुभावों और आत्म चेतना की अभिव्यक्त है।

पाशों के मामों को यह पता चलने पर की शेखजी ने पाशों को दीवाना घराने में दिया है। उसके मामा शेखजी के सामने सिर नवाते हुए कहते है कि ''शेखजी हम अभागों की पत जो एक दिन सिर से उतर गई थी वह आपने लौटा दी। शुक्र है मालिक का लडकी हमारी कुलीन घर जा बैठी।''

आधुनिक काल में सामाजिक परिवर्तन से भौतिक सुख में बहुत बडा परिर्वतन हो गया है इसका परिणाम पति–पत्नी के पवित्र संबंधों पर हो गया है। ग्रामीण समाज में भी यही चिज दिखाई देता है। ग्रामीण परिवार में भी पति अपने स्वार्थ,रंगीले तथा स्त्री लपट स्वभाव के कारण पत्नी पर अत्याचार कर रहा है। पत्नी के चारित्य पर संदेह कर,एसके भोलेपन के कारण उसका शोषण हो रहा है। पुरूष प्रवृत्ति में परिवर्तन हो रहा है । इससे बेकसूर हसाहा,गरीब नारियों पर अन्याय किया जाता है । उसके सपने चूर–चूर हो जाते है। कृष्णा जी के कथा साहित्य में इसका वास्तविक चित्रण दिखाई देता है।

डार से बिछड़ी की पाशों का शारीरिक ,मानसिक,तथा वैचारिक शोषण परिवार के सदस्यों से होता है। शादी के पहले पाशों के हर क्रिया–कलापों को मामा–मामी और नानी शंका की दृष्टि से देखते है, वे उस पर व्यग्य भी करती है। उससे वे हर प्रकार के काम करवा लेते है ?जैसे पानी भरना, बर्तन मॉजना रसोई बनाना आदि।

इसके साथ–साथ वे मार–पीट भी करते थे सिर्फ शारीरिक तकलीफें देकर ही नही रूपके ,उसे हमेशा गालियॅा देकर मानसिक शोषण भी करते हैं।

''अरी कुए में डूब मरी थी तेरा बीज डालने बाली। अब तू संभलकर सॉसफर ....।। यही पाशों सादी के बाद भी दुखी है। दिवान जी की मृत्यु के के बाद चचेरा देवर पाशों पर अत्याचार करने लगता है तब पाशों उसे समझाने के लिए कहती –मेरा नाम न लेना बरकत, दिवान, बडे भाई के नाते तुम्हारी बडी भाभी बराबर है।''

निष्कर्ष

भारतीय संयुक्त परिवार में लोगो की संख्या अधिक होती है सभी का एक दूसरे से कोई न कोई रिश्ता रहता है। परिवार के सदस्यों में पुरूष का प्राधन्य रहता है इसी कारण नारी पर अत्याचार होता है परिवार के सदस्यों में स्वार्थ अहं भावना लालच की भावना आदि कारणों से नारी पर हत्याचार करते है। नारी पर अत्याचार होते समय उसक पति भी इसका विरोध नहीं करता। इससे अत्याचार बढते ही रहते है। गरीब अज्ञानी असहा नारी का जीवन इसे बरबाद हो जाता है। इसका चित्रण कृष्णा जी ने अपने कथा साहित्य में किया है।

यह रचना नारी जीवन की उस पीडा को व्यक्त करती है जिसमें तरह–तरह के दर्द को उसकों भोगना पड़ता है। कृष्णा की यह रचना ग्रामीण परिवेश एवं शहरी परिवेश दोनो ाक एक साथ प्रस्तुत करने में सक्षम हुई है।

संदर्भ सूची

1. कृष्णा साबती क कहाानियों में मध्यवर्गीय नारी – जीवन, प्रो. व्ही. एच. वाघमारे, पूजा पब्लिकेशन, नौबस्ता कानपुर, संस्करण 2019
2. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिम्बत नारी–डॉ. सुलोचन अंतरेड्डी, अमर प्रकाशन, कानपुर , संस्करण 2005
3. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप–डॉ. अनीता, जवाहर पुस्तकालय मथुरा , संस्करण 2006
4. स्त्री चिन्तन और चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006
5. नारी चेतना और सामाजिक विधान, डॉ. मीनाक्षी, रोशनी पब्लिकेशन जवाहर नगर, कानपुर, संस्करण 2008